विश्व व्यापी और नित्य आदर्श

केवल पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी है

लेख

सैइद सुलैमान नदवी रहिमहुल्लाह

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

islamhouse.com

1429-2008

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد للّه، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ باللّه من شرور أنفسنا وسيئات أعمالنا، من يهده اللّه فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا اللّه وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده و رسوله صلى اللّه عليه وعلى آله وصحبه وسلم.

أما بعد:

यह पुस्तिका दरअसल सैइद सुलैमान नदवी रहिमहुल्लाह के उन भाषणों में से एक महत्वपूर्ण भाषण का हिन्दी अनुवाद है, जो उन्हों ने दक्षिण भारत के नगर मदरास में १९२५ ई० में 'इस्लामी शिक्षा समिति' के निमंत्रण पर मुस्लिम विद्यार्थियों के समाने इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (अर्थात् उन पर अल्लाह की कृपा और शान्ति अवतरित हो) के जीवन चरित्र के विभिन्न छेत्रों पर दिए थे।

इस भाषण में अन्य भूतपूर्व संदेश्वाहकों और पैग़मबरों की जीवनियों, तथा अन्य वर्तमान धर्मों के प्रस्थापकों और उनकी जीवनियों और शिक्षाओं का अल्लाह के अन्तिम पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम की जीवनी से तुलना करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि मात्र मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी ही रहती दुनिया तक हर दृष्टि कोण से सर्व मानव समाज के लिए आदर्श बन सकती है। सम्पूर्ण मानव इतिहास में आप के अतिरिक्त कोई ऐसी व्यक्तित्व नहीं जिसकी जीवनी 'आदर्श जीवन' (**Ideal life**) के समस्त मानदण्डों (कसौटियों) पर पूरी उतरती हो !

अनुवादक *

23, *जुलहिज्जा* 1429 *हि*0

21, *दिसम्बर* 2008 ई0

**atazia75@gmail.com*

विश्व व्यापी और नित्य आदर्श केवल अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी है

मित्रो ! आज हमारी सभा का दूसरा दिन है, इस से पहले जो कुछ उल्लेख किया जा चुका है, उसे दृष्टि के सामने रखें, तो बात का सिलसिला आगे बढ़े। मेरी पिछली भाषण का सार यह था कि मनुष्य के वर्तमान और भविष्य के अंधकार को मिटाने के लिए भूतकाल के प्रकाश से लाभ उठाना आवश्यक है। जिन मानव जातियों ने हम पर उपकार किए हैं, वो सब आभार के पात्र हैं किन्तु सब से अधिक हम पर जिन महा पुरूषों का उपकार है, वो अंबियाए (ईश्दूत) किराम अलैहिमुस्सलाम हैं। इन में से प्रत्येक ने अपने-अपने समय में अपनी क़ौमों के सामने उस ज़माने की स्थिति के अनुसार महान आचार और सम्पूर्ण विशेषताओं का एक न एक सर्वोच्च चमत्कारीय आदर्श प्रस्तुत किया। किसी ने सब्र (धैर्य), किसी ने ईसार (परित्याग अर्थात् अपने आप पर दूसरे को

वरीयता देना), किसी ने क़ुरबानी (बलिदान), किसी ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का उत्साह, किसी ने सत्य (हक़्क़) का जोश, किसी ने स्वीकारता, किसी ने पाकदामनी (सतीत्व), किसी ने ज़ुह्द (दुनिया में अरूचि), सारांशतः हर एक ने दुनिया में मानव की पेचीदा (उलझाव वाली) जीवन के मार्ग में एक-एक मीनार (दीपस्तंभ) स्थापित कर दिया है जिस से सिराते-मुस्तक़ीम (सीधे-मार्ग) का पता लग सके, किन्तु आवश्यकता थी एक ऐसे मार्ग दर्शक और पथ प्रदर्शक की जो इस छोर से लेकर उस छोर तक पूरे मार्ग को अपने निर्देशों और अमली नमूनों से उज्जवल और प्रकाशमान कर दे। गोया हमारे हाथ में अपनी व्यवहारिक जीवन (अमली ज़िन्दगी) का समुचित गाइड-बुक दे दे, जिस को लेकर उसी की शिक्षा व निर्देश के अनुसार हर यात्री निःसंकोच मंज़िले-मक़्सूद (लक्ष्य) को पा ले। यह पथ प्रदर्शक संदेश्वाहकों की अन्तिम कड़ी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। क़ुर्आन का कथन है :

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ﴾

(سورة الأحزاب: ٤٥-٤٦)

"ऐ पैग़म्बर ! हम ने आप को गवाही देने वाला, और (नेकों को) शुभ सूचना देने वाला, और (ग़ाफिलों को) डराने वाला (सचेत करने वाला) और अल्लाह की ओर उसके आदेश से बुलाने वाला और एक रौशन करने वाला चिराग बना कर भेजा है।" (सूरतुल अहज़ाब : ४५-४६)

आप संसार में अल्लाह की शिक्षा और निर्देश (हिदायत) के गवाह हैं, नेक लोगों को सफलता और सौभाग्य की शुभ सूचना देने वाले 'मुबश्शिर' हैं, उनको जो अभी तक बेखबर और अचेत हैं, सचेत करने वाले और बेदार करने वाले 'नज़ीर' हैं, भटकने वाले मुसाफिरों को अल्लाह की ओर पुकारने वाले 'दाई' हैं, और स्वयं समुचित प्रकाश और चिराग हैं, अर्थात् आप का अस्तित्व और आप का जीवन रास्ता की रौशनी (मार्ग-ज्योति) है, जो रास्ते की अंधकारों को मिटा रही है। यूँ तो हर पैग़म्बर अल्लाह का शाहिद, दाई, मुबश्शिर और नज़ीर इत्यादि बन कर इस दुनिया में आया है, परन्तु ये सभी विशेषताएं सब के जीवन में व्यवहारिक रूप से बराबर स्पष्ट हो कर प्रकट नहीं हुईं, बहुत से पैग़म्बर थे जो विशिष्ट रूप से शाहिद हुए, जैसे याकूब अलैहिस्सलाम,

इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, इस्माईल अलैहिस्सलाम आदि। बहुत से थे जो स्पष्ट रूप से मुबश्शिर (शुभ सूचक) बने, जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम, ईसा अलैहिस्सलाम। बहुत से थे जिन की विशिष्ट विशेषता नज़ीर थी, जैसे नूह अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम, हूद अलैहिस्सलाम, शुऐब अलैहिस्सलाम। बहुत से थे जो विशिष्ट रूप से हक़्क़ की ओर बुलाने वाले (सत्य के निमंत्रण कर्ता) थे, जैसे यूसुफ अलैहिस्सलाम, यूनुस अलैहिस्सलाम, किन्तु जो शाहिद, मुबश्शिर, नज़ीर, दाई, सिराजे-मुनीर सब कुछ एक ही समय था और जिसके जीवन चित्रावली में ये समस्त बेल-बूटे व्यवहारिक रूप से स्पष्ट थे, वह केवल अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे। और यह इसलिए हुआ कि आप संसार के अन्तिम पैग़म्बर बनाकर भेजे गए थे, जिसके पश्चात कोई दूसरा आने वाला न था, आप ऐसी शरीअत लेकर भेजे गए जो कामिल (परिपूर्ण) थी, जिस को पूर्ण करने के लिए किसी अन्य को आना न था।

आप की शिक्षा अनन्त अस्तित्व रखने वाली थी, अर्थात् क़ियामत तक उसको जीवित रहना था, इसलिए आप की

पवित्र ज़ात को कमाल (पूर्णता) का संग्रह और अनश्वर सम्पत्ति बनाकर भेजा गया।

दोस्तो ! यह जो कुछ मैं ने कहा, यह मेरे धार्मिक आस्था के आधार पर मात्र कोई दावा नहीं है, बल्कि यह वस्तुस्थिति (हक़ीक़ते-वाक़िआ) है, जिसका आधार प्रमाणों और शहादतों पर स्थापित है।

वह जीवन चीरत्र या जीवन का नमूना जो मनुष्यों के लिए एक आदर्श जीवन चीरत्र का काम दे, उसके लिए अनेक शर्तों की आवश्यकता है जिन में सब से पहली और महत्वपूर्ण शर्त तारीखियत (ऐतिहासिकता) है।

ऐतिहासिकता : ऐतिहासिकता से अभिप्राय यह है कि एक कामिल (परिपूर्ण) मनुष्य के जो जीवन चरित्र और हालात प्रस्तुत किए जाएँ वह इतिहास और रिवायत के लिहाज़ से मुस्तनद (प्रमाणित) हों, उनकी हैसियत क़िस्सों और कहानियों की न हो। दिन प्रति दिन का अनुभव है कि मनुष्य की एक साइकलोजी (मानस-शास्त्र या आत्म विद्या) यह है कि किसी जीवन श्रृंखला के बारे में यह पता चल जाए कि यह फर्ज़ी और काल्पनिक है, या संदिग्ध है तो चाहे वह कितना ही प्रभाविक रूप में

क्यों न प्रस्तुत किया जाए, स्वभाव उस से टिकाऊ और गहरा प्रभाव नहीं लेते, इसलिए एक कामिल सीरत (जीवन-चरित्र) के लिए अनिवार्य है कि पहले उसके समस्त महत्वपूर्ण भेदों की तारीखियत (ऐतिहासिकता) पर विश्वास हो, यही कारण है कि तारीखी (ऐतिहासिक) अफसानों से जो प्रभाव स्वभाव पर पड़ता है वह काल्पकिन अफसानों से नहीं पड़ता।

दूसरा कारण ऐतिहासिक जीवनी के अनिवार्य होने का यह है कि आप इस सीरते कामिला (परिपूर्ण जीवनी) का नक़्शा मात्र दिलचस्पी या फ़ुर्सत के घंटों को व्यस्त करने के लिए प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि इस उद्देश्य से प्रस्तुत करते हैं कि हम अपना जीवन इस नमूना पर ढालें और इसकी पैरवी और अनुकरण करें। किन्तु वह जीवन यदि ऐतिहासिक और वास्तविक रूप से प्रमाणित नहीं, तो आप क्योंकर उसके क़ाबिले अमल और पैरवी व तक़्लीद (अनुकरण) के योग्य होने पर ज़ोर दे सकते हैं? कहा जा सकता हे कि यह फर्ज़ी और मिथॅलॉजिकल -Mythological- (पौराणिक) कहानियाँ हैं, जिन पर कोई मनुष्य अपनी अमली ज़िन्दगी की बुनियाद नहीं डाल सकता, इसलिए क्या प्रभावशाली होने के लिए और क्या

अमल और तक़्लीद (अनुकरण) के योग्य होने के लिए सब से पहले ज़रूरी यह है कि उस कामिल मनुष्य की सीरत (जीवन चरित्र) ऐतिहासिक आधार की कसौटी पर पूरी उतरे।

हम समस्त पैग़म्बरों और संदेश्वाहकों का सम्मान और आदर करते हैं, और उनके सच्चे पैग़म्बर होने पर विश्वास रखते हैं। किन्तु अल्लाह के कथन :

﴿ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ ﴾

(سورة البقرة: ٢٥٣)

"यह पैग़म्बर हैं जिन में से कुछ को कुछ पर हम ने फ़ज़ीलत दी है।" (सूरतुल-बक़रह :२५३)

के अनुसार सर्वदा, निरंतरता, अनश्वरता, ख़त्मे नुबुव्वत (ईश्दूतत्व की समाप्ति) और अन्तिम सम्पूर्ण मानव चरित्र होने की हैसियत से अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो विशेष शरफ (प्रतिष्ठा) प्राप्त हुआ है वह अन्य पैग़म्बरों को इस लिए नहीं प्रदान किया गया कि उनको सदा रहने वाला अन्तिम और ईश्दूतत्व का समाप्ति कर्ता नहीं बनाया गया था, उनकी सीरतों (जीवन चरित्र) को उद्देश्य एक विशिष्ट

क़ौम (समुदाय) को एक विशेष काल तक नमूना और (आदर्श) देना था, इस लिए उस काल के पश्चात वह धीरे-धीरे दुनिया से समाप्त हो गईं।

ग़ौर कीजिए कि हर देश, हर समुदाय, हर युग, हर भाषा में कितने लाख मनुष्य अल्लाह का संदेश लेकर आए हों गे। एक इस्लामी रिवायत के अनुसार एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर आए, किन्तु आज उन में से कितनों के नाम हम जानते हैं? और जितनों के नाम जानते भी हैं, क्या उनका हाल जानते हैं? दुनिया की समस्त क़ौमों में सब से अधिक प्राचीन और पुराने होने का दावा हिन्दुओं को है, यद्यपि वह प्रमाणित (स्वीकृत) नहीं, किन्तु ध्यान से देखिए कि उनके धर्म में सैकड़ों कैरेक्टरों के नाम हैं, किन्तु उन में से किसी को 'ऐतिहासिक' होने की प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं है। उन में से अधिकांश के तो नाम के सिवाय किसी और चीज़ का चर्चा तक नहीं, मिथॅलोजी -Mythology- (पौराणिक कथा) से आगे बढ़कर इतिहास के मैदान में उन का गुज़र भी नहीं, उन में से बेहतर से बेहतर ज्ञात कैरेक्टर वह हैं जो महाभारत और रामायण के हीरो हैं, मगर उन की ज़िन्दगी की घटनाओं में से इतिहास किस को कह सकते हैं? यह भी नहीं

मालूम कि यह ज़माना के किस दौर (युग), और दौर (युग) की किस शताब्दी और शताब्दी के किस साल की घटनाएँ हैं। अब यूरोप के कुछ विद्वान बीसियों क़यासात (अन्दाज़ो और अनुमानों) से कुछ-कुछ निकटीय या अनुमानित ज़मानों की ताईन करते हैं, और उन्ही को हमारे हिन्दू शिक्षित लोग अपने ज्ञान की सनद जानते हैं। लेकिन यूरोप के अन्वेषकों में से अधिकतर तो उनको ऐतिहासिक दर्जा (स्थान) ही नहीं देते, और यह स्वीकार ही नहीं करते कि यह फर्ज़ी कहानियाँ कभी अस्तित्व में भी आई थीं।

ईरान के पुराने मजूसी (पारसी) धर्म का संस्थापक ज़रथुष्ट्र अब भी लाखों आदमियों की श्रद्धा का केन्द्र है, किन्तु उसकी ऐतिहासिक व्यक्तित्व भी पुरातत्व की ओट में लुप्त है। यहाँ तक कि उसके ऐतिहासिक अस्तित्व के विषय में भी कुछ शक्की मिज़ाज (संदिग्ध स्वभाव वाले) अमेरिकीय और यूरोपीय विद्वानों को सन्देह है। मुस्तशरेक़ीन (Orientalist) में से जो लोग उसके ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकारते हैं, सैकड़ों अनुमानों से उसके जीवन की घटनाओं की कुछ-कुछ ताईन करते हैं, तद्यपि वो भी विभिन्न अन्वेषकों की पारस्परिक विपरीत

विचारों से इस प्रकार शंकित हैं कि कोई मनुष्य उनके भरोसा पर अपने व्यवहारिक जीवन की बुनियाद स्थापित नहीं कर सकता। ज़रथुष्ट्र का जन्म-स्थान, जन्म-वर्ष, राष्ट्रीयता, खानदान, धर्म, धर्म-प्रचार, धार्मिक ग्रन्थ की वास्तविकता, भाषा, मृत्यु-वर्ष, मृत्यु-स्थान - इन में से हर एक मस्अला सैकड़ों मतभेदों का परिश्रय है, और सहीह रिवायतों का इस प्रकार अभाव है कि सिवाय अनुमानित अटकलों के और कोई प्रकाश इन प्रश्नों के अँधेरों को दूर नहीं कर सकती। इस पर भी पारसी लोग इन संदिग्ध काल्पनिक (अनुमित) बातों का ज्ञान सीधा अपनी रिवायतों से नहीं रखते, बल्कि यूरोपियन और अमेरिकन स्कालर्स (विद्वानों) के उपदेशों और निर्देशों से वो अभी समझने का प्रयास कर रहे हैं, और जो उनके व्यक्तिगत ज्ञान के स्रोत हैं वह **'फिरदौसी'** के **'शाहनामा'** से आगे नहीं बढ़ते। यह उज़्र (बहाना) बेकार है कि यूनानी दुश्मनों ने उनको मिटा दिया। यहाँ बहरहाल हम को केवल इतना बताना है कि वो मिट गए, यद्यपि वो किसी प्रकार से मिटे हों। और यही इस बात की दलील है कि उन को अनश्वरता और नित्यता का जीवन नहीं मिला। और कर्न (Kern) और डार मीटीटर (Dar Meteter) जैसे

अन्वेषकों को ज़रथुष्ट्र की ऐतिहासिक व्यक्तित्व का इनकार करना पड़ा।

प्राचीन एशिया का सब से अधिक विस्तृत धर्म बौद्ध है, जो कभी हिन्दुस्तान, चीन, और समस्त मध्य एशिया, अफगानिस्तान, तुरकिस्तान तक फैला हुआ था। और अब भी बरमा, सियाम, चीन, जापान और तिब्बत में मौजूद है। हिन्दुस्तान में यह कहना आसान है कि ब्रह्मनों ने इस को मिटा दिया, और मध्य ऐशिया में इस्लाम ने इस को समाप्त कर दिया। किन्तु समस्त ऐशिया-ए-अक़्सा में तो इसका शासन, इसकी सभ्यता, इसका धर्म तल्वार की शक्ति के साथ-साथ स्थापित है। और उस समय से अब तक अपराजित है। किन्तु क्या यह चीज़ें बुद्ध के जीवन और चरित्र को ऐतिहासिक प्रकाश में बरक़रार रख सकीं? और एक इतिहासकार और जीवनी लेखक के सभी प्रश्नों का वह संतोष जनक उत्तर दे सकती है ? स्वयं बुद्ध के वजूद के समय काल की ताईन मगध देश के राजाओं की घटनाओं से की जाती है, वर्ना कोई दूसरा साधन (स्रोत) नहीं है। और उन राजाओं का समय काल भी इस प्रकार सुनिश्चित हो सका है कि उनके सिफारती संबंध संयोग वश यूनानियों से स्थापित हो गए थे।

चीनी धर्म के प्रस्थापक का हाल इस से भी अधिक अनिश्चित है, और चीन के एक धर्म-प्रस्थापक कन्फ्यूशियस के विषय में हम को बुद्ध से भी कम जानकारी है, हालाँकि उस के मानने वालों की संख्या करोड़ों से भी अधिक है।

सामी क़ौम (समुदाय) में सैकड़ों पैग़म्बर आए, किन्तु नाम के सिवाय इतिहास ने उनका और कुछ हाल न जाना, नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हूद अलैहिस्सलाम, सालेह अलैहिस्सलाम, इस्माईल अलैहिस्सलाम, इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, याकूब अलैहिस्सलाम, ज़करिया अलैहिस्सलाम, यह्या अलैहिस्सलाम के हालात और सीरतों के एक भाग के अतिरिक्त क्या हम को कोई कुछ बता सकता है? उन की सीरतों के आवश्यक भाग इतिहास की कड़ियों से बहरहाल लुप्त हैं। अब उनके पवित्र जीवन के अधूरे और बेजोड़ हिस्से एक सम्पूर्ण मानव जीवन के अनुसरण और पैरवी का सामान कर सकते हैं? कुर्आन मजीद को छोड़ कर यहूदियों के जिन असफार (किताबों) में उनके हालात उल्लिखित हैं, उन में से हर एक के संबंध में अन्वेषकों को विभिन्न शंकाएँ हैं। और यदि हम उन शंकाओं से उपेक्षा भी कर लें तो

उनके अन्दर उन महापुरूषों की रूप-रेखा किस प्रकार अधूरी हैं।

मूसा अलैहिस्सलाम का हाल हम को तौरात से ज्ञात होता है, किन्तु स्वयं वह तौरात जो आज मौजूद है, अन्वेषकों के बयान के अनुसार जैसाकि स्वयं इन्साइकलोपीडिया ब्रिटानिका के संकलन कर्ता स्वीकारते हैं, मूसा अलैहिस्सलाम के सैकड़ों साल के बाद वजूद में आई है। इस पर भी अब जर्मन स्कालर्स ने पता लगाया है कि वर्तमान तौरात में साथ ही साथ हर वाक़िआ से संबंधित दो विभिन्न सूरतों (शक्लों) या रिवायतों का सिलसिला है जो आपस में कहीं-कहीं विपरीत हैं, और यही कारण है कि तौरात की जीवनियों और घटनाओं में हर क़दम पर हम को तज़ाद-बयानी (पारस्परिक विपरीत वक्तव्य) का सामना होता है। इस थ्योरी का विस्तार इन्साइकलोपीडिया ब्रिटानिका के अन्तिम संस्करण के आलेख 'बाईबल' में मौजूद है। अब ऐसी अवस्था में मूसा अलैहिस्सलाम बल्कि आदम अलैहिस्सलाम से लेकर मूसा अलैहिस्सलाम तक की घटनाओं की ऐतिहासिक हैसियत (महत्व) क्या रह जाती है ?

ईसा अलैहिस्सलाम के हालात इन्जीलों में उल्लिखित हैं, किन्तु उन बहुत सी इन्जीलों में से आज ईसाई दुनिया का बड़ा भाग केवल चार इन्जीलों को स्वीकारता है। शेष इन्जील तुफूलियत और इन्जील बरनाबास आदि ना मुस्तनद (अविश्वस्त) हैं। इन चार इन्जीलों में से एक इन्जील के भी लिखने वाले ने ईसा अलैहिस्सलाम को स्वयं नहीं देखा था, उन्हों ने किस से सुनकर ये हालात का संग्रह लिखा, यह भी मालूम नहीं। बल्कि अब तो यह भी शंकित (संदिग्ध) समझा जाता है कि जिन चार आदमियों की ओर इनकी निस्बत की जाती है वह निस्बत सहीह भी है? (कि नहीं)। यह भी स्पष्ट रूप से साबित नहीं कि वह किन भाषाओं में और किन ज़मानों में लिखी गईं। ६० ई० से लेकर बाद के विभिन्न सालों तक अनाजील के विभिन्न भाष्य कार उनकी रचना का ज़माना बताते हैं। ईसा अलैहिस्सलाम का जन्म, मृत्यु और तिगड्डा (ईसाई मतानुसार बाप, बेटा और रूहुल कुदस) की शिक्षा - इन सब को सामने रख कर अब कुछ अमेरिकन आलोचक और रेश्नलिस्ट (हेतुवादी) यह कहने लगे हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम का वजूद मात्र काल्पनिक (फर्ज़ी) है। और उनकी पैदाईश और तिगड्डा का बयान यूनानी व रूमी मिथॅलोजी की मात्र नक़्क़ाली है। क्योंकि इस तरह के

ख्यालात उन क़ौमों में विभिन्न देवताओं और हीरोज़ (नायकों) के विषय में पहले से मौजूद थे। चुनाँचे चिकागो के प्रसिद्ध पत्रिका रोपन कोर्ट में महीनों ईसा अलैहिस्सलाम के काल्पनिक अस्तित्व होने पर बहस रही है। इस बयान से ईसाई रिवायतों के द्वारा ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन की ऐतिहासिक हैसियत कितनी कमज़ोर मालूम होती है।

सम्पूर्णता : किसी मानव चरित्र के लिए दायमी (सर्वदा) आदर्श बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसके जीवन-ग्रन्थ के समस्त भाग हमारी दृष्टि के समाने हों, कोई घटना रहस्य के ओट और अनभिगता (अज्ञानता) के अंधकार में लुप्त न हो। बल्कि उसकी समस्त जीवनी और हालात उज्जवल दिन के समान दुनिया के सामने हों, ताकि मालूम हो सके कि उस की जीवनी कहाँ तक मानव समाज के लिए एक आदर्श जीवन की योग्यता रखती है।

इस कसौटी पर अगर धर्म के नियम-निर्माता और धर्म-संस्थापकों की जीवनियों और चरित्रों पर दृष्टि करें तो ज्ञात होगा कि अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त और कोई हस्ती (व्यक्तित्व) इस कसौटी पर पूरी नहीं उतरती। इसी से ज्ञात होता है कि आप खातमुल-अंबिया (पैग़म्बरों के समाप्त कर्ता अर्थात् अन्तिम पैग़म्बर) हो कर दुनिया में तश्रीफ लाए थे। हम कह चुके हैं कि हज़ारों-लाखों अंबिया अलैहिमुस्सलाम और धर्म-सुधारकों के दल में से केवल तीन-चार ही हस्तियाँ ऐसी हैं जो ऐतिहासिक कही जा सकती हैं। किन्तु कामिलियत (सम्पूर्णता) की हैसियत से वह भी पूरी नहीं हैं। ग़ौर कीजिए कि जनगणना के अनुसार आज बुद्ध के अनुयायी दुनिया की आबादी के चौथाई भाग पर क़ाबिज़ हैं। किन्तु इस पर भी ऐतिहासिक रूप से बुद्ध का जीवन केवल कुछ क़िस्सों और कहानियों का संग्रह है। किन्तु यदि हम इन्ही कहानियों और क़िस्सों को इतिहास का दर्जा देकर बुद्ध के जीवन के आवश्यक से आवश्यक और महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण अंशों को तलाश करें तो हम को नाकामी होगी। इन क़िस्सों और कहानियों से हम को अधिक से अधिक यह ज्ञात होता है कि किसी काल में नेपाल की तराई के किसी देश में एक राजा का लड़का था, जिस ने प्राकृतिक तौर पर सोचने वाला स्वभाव पाया था। जवान होने और एक बच्चा का बाप बनने के बाद सहसा उसकी दृष्टि कुछ आपत्ति-ग्रस्त लोगों

पर पड़ी। वह बहुत अधिक प्रभावित हुआ, और घर-बार छोड़ कर देश से निकल गया। और वाराणसी, गया, पाटली पुत्र (पटना) और राजगीर (बिहार) के कभी नगरों में और कभी जंगलों और पहाड़ों में फिरता रहा और अल्लाह जाने उम्र की कितनी मंज़िलें तय करने के बाद उस ने गया के एक पेड़ के नीचे इन्किशाफे-हक़ीक़त (वास्तकिता का रहस्य खुलने) का दावा किया, और वाराणसी से बिहार तक अपने नये धर्म का उपदेश देता रहा। फिर इस दुनिया से रूख्सत हो गया। यह सारांश है बुद्ध के विषय में हमारी जानकारी का।

ज़रथुष्ट्र भी एक धर्म का संस्थापक है। किन्तु हम बता चुके हैं कि क़यासात (अनुमानों) के सिवाय उसके जीवन और चरित्र का भी अता-पता नहीं मिलता। इन अनुमानों से भी जो कुछ मालूम हुआ है उसको हम अपनी जुबान से कहने के बजाए बीसवीं शताब्दी के विश्वस्त जानकारी के सारांश इन्साईकलोपीडिया ब्रिटानिका के आलेख 'ज़रास्टर' से हम यहाँ उल्लेख करते हैं :

"ज़रथुष्ट्र की जिस व्यक्तित्व से (गाथा के) इन कविताओं (अश्आर) में हमारी मुलाक़ात होती है, वह नये ओस्ता के ज़रथुष्ट्र से बिल्कुल विभिन्न है।

वह ठीक विपरीत है। इस दूसरे अफसाना की चमत्कारीय व्यक्तित्व (इसके बाद गाथा के कुछ वाक़ई हालात उल्लेख कर के निबंधकार लिखता है) तद्यपि हम यह आशा न करें कि हम गाथा से ज़रथुष्ट्र के निर्णायक हालात जान सकते हैं। वह हम को ज़रथुष्ट्र की लाईफ का कोई ऐतिहासिक बयान नहीं देती, और जो कुछ मिलता भी है उसके अर्थ या तो स्पष्ट नहीं हैं या ग़ैर मफहूम (निर्बोध) हैं।''

ज़रथुष्ट्र के संबंध में वर्तमान समय की रचनाओं का अध्याय आरम्भ करते हुए यह निबंधकार लिखता है :

''उसके जन्म-स्थान की ताईन से संबंधित शहादतें परस्पर विपरीत हैं।''

उसके समय काल का तऐयुन (सुनिश्चित करने) के संबंध में भी यूनानी इतिहासकारों के बयानात, तथा वर्तमान अन्वेषकों के अनुमान विभिन्न हैं। निबंधकार लिखता है :

''ज़रथुष्ट्र के ज़माना से हम बिल्कुल अनभिज्ञ हैं।''

बहरहाल जो कुछ हम को मालूम है वह यह है कि आज़रबाईजान के किसी स्थान पर पैदा हुआ, बलख

आदि की ओर धर्म-प्रसार किया, हश्तास्प बादशाह ने उसके धर्म को स्वीकार किया, उसने कुछ असाधारण चमत्कार दिखाए, उसने शादी-विवाह किया, सन्तान हुई, और फिर कहीं मर गया। क्या ऐसी अज्ञात व्यक्तित्व के विषय में कोई सम्पूर्णता का गुमान भी कर सकता है? और उसका जीवन इन्सानी समाज के लिए रास्ते का चिराग (मार्ग-दीप) बन सकता है, या बनाया जा सकता है?

पिछले पैग़म्बरों में सब से प्रसिद्ध जीवन मूसा अलैहिस्सलाम का है, वर्तमान तौरात के विश्वस्त या अविश्वस्त होने के विवाद से हट कर के हम उसके बयानात को बिल्कुल सहीह स्वीकार किए लेते हैं। फिर भी तौरात की पाँचों किताबों से हम को मूसा अलैहिस्सलाम के जीवन के किस प्रकार भाग हाथ आते हैं? जो कुछ है वह यह है कि मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हो कर फिरऔन के घर पालन पोषण पाते हैं। जवान हो कर फिरऔनियों के अत्याचारों के विरूद्ध बनी इस्राईल की एक-दो अवसर पर मदद करते हैं। फिर मिस्र से भाग कर मद्यन आते हैं। यहाँ शादी होती है, और एक ज़माना तक यहाँ जीवन बिता कर के मिस्र वापस जाते हैं। रास्ते में ईश्दूतत्व (पैग़म्बरी) से सम्मानित किए जाते

हैं। फिर्औन के पास पहुँचते हैं, चमत्कार (मोजिज़ात) दिखाते हैं, और बनी इस्राईल को मिस्र से ले जाने की अनुमति चाहते हैं। अनुमति नहीं मिलती। अन्ततः गफलत में अपनी क़ौम के साथ निकल जाते हैं। अल्लाह के आदेश से समुद्र में उन को रास्ता मिल जाता है, फिरऔन डूब जाता है। और वह अपनी क़ौम को ले कर अरब और शाम में प्रवेश करते हैं। काफिर (नास्तिक) लोगों से लड़ाईयाँ पेश आती हैं। इसी अवस्था में जब वह बूढ़े हो जाते हैं तो एक पहाड़ी पर उनकी मृत्यु हो जाती है। तौरात इस्तिस्ना के अन्तिम वाक्य में है :

"सो अल्लाह का बन्दा मूसा अल्लाह के आदेशानुसार मुवाब की धरती में मर गया, और उसने उसे मुवाब की एक घाटी में बैत फगूर के सामने गाड़ा, परन्तु आज के दिन तक कोई उसकी समाधि नहीं जानता, और मूसा अपने मरने के समय एक सौ बीस (१२०) वर्ष का था, और अब तक बनी इस्राईल में मूसा के समान कोई ईश्दूत नहीं हुआ।"

१. यह तौरात की पाँचवीं किताब के वाक्य हैं, जिसकी रचना भी मूसा अलैहिस्सलाम की ओर मन्सूब है। इन

वाक्यों में सब से पहले आप की दृष्टि इस पर पड़नी चाहिए कि यह पूरी किताब या इस के अन्तिम भाग मूसा अलैहिस्सलाम की रचना नहीं। किन्तु फिर भी दुनिया मूसा अलैहिस्लाम के इस जीवनी लेखक को नहीं जानती।

२. इन वाक्यों के शब्द कि : **"आज तक उस की क़ब्र कोई नहीं जानता, और अब तक वैसा कोई नबी बनी इस्राईल में नहीं हुआ।"** इस बात के प्रतीक हैं कि मूसा अलैहिस्सलाम की जीवनी के यह पूरक भाग इतनी मुद्दत के बाद लिखे गए हैं, जिन में एक प्रसिद्ध यादगार को भूल जा सकते हैं, और एक नये पैग़म्बर के उदय की आशा की जा सकती थी।

३. मूसा अलैहिस्लाम ने एक सौ बीस वर्ष की आयु पाई। किन्तु ग़ौर से देखो कि एक सौ बीस वर्ष की आयु के लम्बे ज़माना के विस्तार को भरने के लिए मूसा अलैहिस्सलाम की क्या घटनाएँ मालूम हुई हैं। और उनकी जीवनी के आवश्यक भाग हमारे हाथ में क्या हैं। जन्म, जवानी, हिजरत, शादी और नुबुव्वत के वाक़िआत मालूम हैं। फिर कुछ लड़ाईयों के बाद बुढ़ापे में १२० वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु होती है। इन वाक़िआत को जाने दीजिए। ये तो व्यक्तिगत

हालात हैं जो हर आदमी के जीवन में अलग-अलग पेश आते हैं। मनुष्य को अपने समाज के लिए अमली नमूना (आदर्श) के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता है वह अख़लाक़ (आचार) व स्वभाव और जीवन के रहन-सहन (तौर-तरीक़े) हैं। और यही चीज़ें (अंश) मूसा अलैहिस्सलमा की पैग़म्बराना जीवनी से लुप्त हैं। वर्न सामान्य आंशिक हालात अर्थात् व्यक्तियों के नाम व नसब, स्थान व पते, जनगणनाएं और क़ानूनी कथन बहुत कुछ तौरात में उल्लिखित हैं, किन्तु यह जानकारियाँ यद्यपि जुगराफिया (भूगोल), करानोलोजी, नसब नामों और क़ानून दानी के लिए कितने ही आवश्यक क्यों न हों किन्तु अमली हैसियत से बिल्कुल बेकार और जीवनी के अंशों की सम्पूर्णता से खाली हैं।

इस्लाम से सब से निकट समय काल के पैग़म्बर ईसा अलैहिस्सलाम हैं, जिन के अनुयायी आज यूरोपियन की जनगणना के अनुसार अन्य समस्त धर्मों के अनुयायियों से अधिक हैं। मगर यह सुनकर आप को आश्चर्य होगा कि इसी धर्म के पैग़म्बर के जीवन के अंश अन्य समस्त प्रसिद्ध धर्मों के प्रस्थापकों और पैग़म्बरों की जीवनी से सब से अधिक कम ज्ञात हैं। आज ईसाई यूरोप की

ऐतिहासिक रूचि का यह हाल है कि वह बाबिल व असीरिया, अरब व शाम, मिस्र व अफरीक़ा, हिन्दुस्तान व तुर्किस्तान के हज़ारों वर्ष की घटनाएं किताबों और कत्बों (लाटों) को पढ़कर, और खण्डरों, पहाड़ों, और ज़मीन की पर्तों (तबक़ों) को खोद कर सामने ला रहा है, और दुनिया के इतिहास के लुप्त पन्नों को नये सिरे से संकलित कर रहा है। किन्तु उसका मसीहाई चमत्कार जिस चीज़ को जीवित नहीं कर सकता वह स्वयं ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन की गाड़ी हुई घटनाएँ हैं। प्रोफेसर रीनान ने क्या क्या न किया किन्तु ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन की घटनाएं न मिलना थीं, न मिल सकीं। इन्जील के बयान के अनुसार ईसा अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी ३३ वर्ष की थी। वर्तमान इन्जीलों की रिवायतें सर्वप्रथम तो मोतबर नहीं और जो कुछ हैं भी वह केवल उनके अन्तिम तीन सालों की ज़िन्दगी को सम्मिलित हैं। हम को उनके ऐतिहासिक जीवन के केवल यह अंश मालूम हैं : वह पैदा हुए, और पैदाईश के बाद मिस्र लाए गए, लड़कपन में एक दो मोजिज़े (चमत्कार) दिखाए, उसके बाद वह लुप्त हो जाते हैं। और फिर सहसा तीस वर्ष की आयु में बप्तिस्मा देते और पहाड़ों और दरियाओं के किनारे मछेरों को उपदेश देते दिखाई देते हैं। कुछ शिष्य

पैदा होते हैं। यहूदियों से कुछ मुनाज़रे होते हैं। यहूदी उन को पकड़वा देते हैं। रूमी गवर्नर के न्यायालय में मुक़द्दमा पेश होता है और सूली दे दी जाती है। तीसरे दिन उन की क़ब्र उनके शव से खाली नज़र आती है। तीस वर्ष और कम से कम पचीस वर्ष का ज़माना कहाँ बीता और क्योंकर बीता? दुनिया इस से अनभिज्ञ है, और रहे गी। इन तीन वर्षों की घटनाओं में भी क्या है? कुछ मोजिज़े (चमत्कार), उपदेश, और अन्ततः सूली !

जामेईयत (सर्वव्यापकता) : किसी सीरत (जीवनी) के अमली नमूना (आदर्श) बनने के लिए तीसरी अनिवार्य शर्त 'सर्वव्यापकता' है।

जामेईयत (सर्वव्यापकता) से अभिप्राय यह है कि विभिन्न मानव सम्प्रदाय को अपनी हिदायत (मार्ग दर्शन) और प्रकाश के लिए जिन नमूनों (आदर्शों) की ज़रूरत होती है, या प्रत्येक व्यक्ति को अपने विभिन्न संबंधों और फराईज़ व वाजिबात (दायित्व) को अदा करने के लिए जिन उदाहरणों और नमूनों की आवश्यकता होती है, वो सब उसके 'आदर्श जीवन' के दर्पण में मौजूद हों। इस दृष्टि कोण से भी देखिए तो मालूम होगा कि सिवाय खातमुल अंबिया (अन्तिम ईश्दूत) मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम के कोई द्वितीय व्यक्तित्व इस कसौटी (मानदण्ड) पर पूरी नहीं उतरी। धर्म क्या चीज़ है? अल्लाह और बन्दों, तथा आपस में बन्दों से संबंधित जो फराईज़ और वाजिबात (दायित्व) हैं, उनको स्वीकारना और अदा करना। दूसरे शब्दों में यह कहा जासकता है कि वह अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ बजा लाने का नाम है। इसलिए प्रत्येक धर्म के अनुयायियों और मानने वालों का दायित्व है कि अपने-अपने पैग़म्बरों और प्रस्थापकों की सीरतों (जीवनियों) में इन हुक़ूक़ व फराईज़ और वाजिबात की तफ्सील तलाश करें और उनके अनुसार अपने जीवन को उस साँचे में ढालने का प्रयत्न करें। अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ दोनों ऐतिबार से जब आप तफ्सीलात ढूँढ़ें गे तो वो इस्लाम के पैग़म्बर के सिवाय आप को कहीं नहीं मिलें गी।

धर्म दो प्रकार के हैं, एक वह जिन में या तो अल्लाह (परमेश्वर) को स्वीकारा ही नहीं गया है जैसाकि बौद्ध और जैन मत के विषय में कहा जाता है। इसलिए इन धर्मों में तो ईश्वर, उसकी ज़ात व सिफात और अन्य ईश्वरीय अधिकारों का पता ही नहीं। और इसलिए इन के प्रस्थापकों में ईश्वरीय प्रेम, खुलूस, एकेश्वरवाद आदि की तलाश ही व्यर्थ है। दूसरे वो धर्म हैं जिन्हों ने अल्लाह

(परमेश्वर) को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है। इन धर्मो के पैग़म्बरों और प्रस्थापकों के जीवन में भी ईश्वर याचना के वाक़िआत शुन्य हैं। ईश्वर के प्रति हम को क्या विश्वास (ऐतिक़ादात, आस्थाएँ) रखने चाहिएँ और उनकी क्या आस्थाएं थीं, और उन आस्थाओं पर उन को किस हद तक व्यवहारिक रूप से विश्वास था इसकी तफ्सील से उनकी जीवनियाँ रिक्त हैं। पूरी तौरात पढ़ जाएँ, अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) और उसके नाम और क़ुरबानी के शराईत के अतिरिक्त तौरात की पाँचों किताबों में कोई ऐसा वाक्य नहीं जिस से यह मालूम हो कि मूसा अलैहिस्सलाम के हार्दिक संबंधों, और आज्ञापालन व उपासना, और अल्लाह पर भरोसा व विश्वास, अल्लाह के परिपूर्ण सिफात का दर्शन उनके पवित्र हृदय में कहाँ तक था। हालाँकि अगर मूसा अलैहिस्सलाम का धर्म सदा रहने के लिए और अन्तिम धर्म के रूप में आया होता तो उसके अनुयायियों का दायित्व था कि वो इन घटनाओं को लिखित रूप देते, किन्तु अल्लाह की मसलहत यह न थी, इसलिए उनको इसकी तौफीक़ न मिली।

ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन का दर्पण इन्जील है। इन्जील में इस एक मस्अला के अतिरिक्त कि ईश्वर (अल्लाह)

ईसा अलैहिस्सलाम का बाप था, हम को यह नहीं ज्ञात होता कि इस सांसारिक जीवन में इस मुक़द्दस बाप और बेटे में क्या संबंध थे? बेटे के इक़रार से यह तो ज्ञात होता है कि बाप को बेटे से बड़ी महब्बत थी, किन्तु यह नहीं मालूम नहीं होता कि बेटे को बाप से किस दर्जा महब्बत थी? वह कहाँ तक अपने बाप के आज्ञा पालन और फरमांबरदारी में व्यस्त था? वह उसके आगे रात-दिन में कभी झुकता भी था? और 'आज की रोटी' के अतिरिक्त कोई और भी चीज़ उसने कभी उस से माँगी? गिरिफ्तारी की रात से पहले कोई एक रात भी उस पर ऐसी गुज़री जब वह बाप के सामने दुआ माँग रहा हो? फिर ऐसी सीरत से हम रूहानी हैसियत से क्या लाभ उठा सकते हैं? यदि ईसा अलैहिस्सलाम की जीवनी में अल्लाह और बन्दे के संबंध स्पष्ट होते तो साढ़े तीन सौ वर्ष के बाद पहले ईसाई बादशाह को नीसन में तीन सौ ईसाई विद्वानों की सभा इस के निर्णय के लिए एकत्र करनी न पड़ती, और वह अब तक एक दुर्बोध रहस्य न बने रहते।

अब हुक़ूक़ुल-इबाद (मानव अधिकार) की हैसियत को लीजिए, तो इस से भी खातमुन्नबीईन (समस्त पैग़म्बरों के समाप्त कर्ता) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवाए

अन्य समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम और धर्म प्रस्थापकों की जीवनियाँ शुन्य हैं। बुद्ध ने अपने समस्त अह्ल व अयाल (बीवी बच्चों) और खानदान को छोड़ कर जंगल का रास्ता लिया, और फिर कभी अपनी बीवी से जिस से उसको महब्बत थी और अपने एकलौते बेटे से कोई संबंध न रखा। दोस्तों के झुरमुट से अलग हो गया, शासन और राज-काज के भारी बोझ से छुटकारा प्राप्त कर लिया, और निर्वाण या मृत्यु की प्राप्ति को मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य घोषित किया। इन हालात में क्या कोई मनुष्य यह समझ सकता है कि इस दुनिया के बसने वालों के लिए, जिन में राज्य व प्रजा, बादशाह व फक़ीर, आक़ा व नौकर, बाप व बेटे, भाई व बहन, और दोस्त व अहबाब के संबंध हैं, बौद्ध की सीरत (जीवन चरित्र) कुछ लाभ कारी हो सकती है? क्या बौद्ध के जीवन में कोई ऐसी जामेईयत (सर्वव्यापकता) है जो संन्यासी भिक्षुओं और कारोबारी मनुष्यों दोनों के लिए अनुकरण का पात्र हो? इसीलिए उसकी ज़िन्दगी कभी भी उसके मानने वाले कारोबारियों के लिए अनुसरण योग्य न बनी। वर्न चीन व जापान, सियाम व अयाम, तिब्बत व बरमा की समस्त राज्याएं, व्यापार, शिल्पकारियाँ और अन्य कारोबारी मशागिल तुरन्त बन्द हो जाते, और

आबाद नगरों के स्थान पर केवल सुनसान जंगलो का अस्तित्व रह जाता।

मूसा अलैहिस्सलाम के जीवन का एक ही पहलू अत्यंत स्पष्ट है, और वह जंग और सपेहसालारी का पहलू है, नहीं तो इस के अतिरिक्त उन की जीवनी की पैरवी करने वालों के लिए सांसारिक अधिकारों, वाजिबात व फराईज़ और ज़िम्मेदारियों (दायित्व) का कोई नमूना (आदर्श) मौजूद नहीं है। पति-पत्नी, बाप-बेटे, भाई-भाई, दोस्त व अहबाब के संबंध में उनका क्या व्यवहार था, संधि के फराईज़ में उनका क्या दस्तूर (नियम) था, अपने धन को किन लाभकारी कामों में उन्हों ने लगाया, बीमारों, यतीमों (अनाथों), मुसाफिरों, और गरीबों के साथ उनका क्या व्यवहार (बर्ताव) था, और उनके मानने वाले इन बातों में उनके जीवन के उदाहरणों से क्योंकर लाभ उठाएं? मूसा अलैहिस्सलाम बीवी रखते थे, बच्चे रखते थे, भाई रखते थे, दूसरे रिश्तेदार और संबंधित जन रखते थे, और हमारा विश्वास है कि उनका पैग़म्बराना (अवतारिक) व्यवहार निःसन्देह प्रत्येक आलोचना से पवित्र होगा, किन्तु उनकी मौजूदा जीवनी की किताबों में हम को

ये अध्याय नहीं मिलते जो हमारे लिए अनुसरण योग्य और नमूना (आदर्श) हों।

ईसा अलैहिस्सलाम की माँ थीं, और इन्जील के बयान के अनुसार उनके-भाई बहन भी थे, बल्कि माद्दी (भौतिक) बाप तक भी मौजूद था, किन्तु उनके जीवन की घटनाएँ इन रिश्तेदारों और प्रिय लोगों के साथ उनका संबंध, व्यवहार, आचार और बर्ताव स्पष्ट नहीं करतीं। हालाँकि दुनिया हमेशा इन्हीं संबंधों से आबाद रही है, और रहे गी, धर्म का एक बड़ा भाग इन्ही की संबंधित ज़िम्मेदारियों के अदा करने का नाम है। इसके अतिरिक्त ईसा अलैहिस्सलाम ने पराधीनता का जीवन बसर किया, इसलिए उनकी जीवनी समस्त पदाधिकारिता दायित्व (हाकिमाना फराईज़) के उदाहरणों से खाली है। वह बीवी बच्चे वाले न थे, इसलिए उन दो जोड़ों के लिए जिन के बीच तौरात के पहले ही अध्याय ने माँ-बाप से अधिक मज़बूत (सुदृढ़) संबंध स्थापित किया है, ईसा अलैहिस्सलाम का जीवन अनुसरण का कोई सामान नहीं रखता, और चूँकि दुनिया की अधिकतर आबादी बीवी-बच्चों वाली जीवन व्यतीत करती है, इसलिए इस का अर्थ यह है कि दुनिया के अधिकतर आबादी के लिए

उनकी जीवनी आदर्श (नमूना) नहीं बन सकती। जिस ने घर-बार, बीवी-बच्चे, धन व सम्पत्ति, संधि व युद्ध, दोस्त व दुश्मन के संबंधों से कभी लाग ही न रखा हो, वह इस दुनिया के लिए जो इन्ही संबंधों पर आधारित है क्योंकर आदर्श बन सकता है? अगर आज दुनिया यह जीवन अपना ले तो कल वह सुंसान क़ब्रिस्तान बन जाए, सभी उन्नतियाँ और विकास यकायक रूक जाएँ, और ईसाई यूरोप तो शायद एक मिनट के लिए भी जीवित न रहे।

अमलिय्यत (व्यवहारिकता) : 'आदर्श जीवन' (**Ideal life**) का सब से अन्तिम मानदण्ड (कसौटी) 'अमलिय्यत' (व्यवहारिकता) है, अमलिय्यत से अभिप्राय यह है कि धर्म का शास्त्री और प्रस्थापक जिस शिक्षा को पेश कर रहा हो, स्वयं उसका व्यक्तिगत अमल उसका उदाहरण और नमूना हो, और स्वयं उसके अमल ने उसकी शिक्षा को क्रियात्मक और व्यवहारिक अर्थात् क़ाबिले अमल साबित किया हो।

अच्छा से अच्छा तर्क शास्त्र (फलसफा), रोचक से रोचक विचार, और बढ़िया से बढ़िया बातें, हर व्यक्ति हर समय पेश कर सकता है, किन्तु जो चीज़ हर व्यक्ति हर समय

पेश नहीं कर सकता वह अमल है। मानव चरित्र (जीवनी) के सर्वश्रेष्ठ और सम्पूर्ण होने का प्रमाण, उसके नेक और निर्दोष कथन, विचार, आचारनीति, दार्शनिक दृष्टि कोण नहीं, बल्कि उसके आमाल और कारनामे हैं। यदि यह मेयार (मानदण्ड) स्थापित न किया जाए तो अच्छे और बुरे का अन्तर मिट जाए, और दुनिया केवल बात बनाने वालों का घर रह जाए। अब मुझे पूछने दीजिए कि लाखों धर्म निर्माताओं और हज़ारों धर्म प्रस्थापकों में से कौन अपनी अमली सीरत (व्यवहारिक जीवनी) को इस तराजू पर तुलवाने के लिए आगे बढ़ सकता है?

"तो अपने परम परमेश्वर को अपनी सारी जान और दिल से प्यार कर, तो दुश्मन को प्यार कर, जो तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसके सामने अपना बायाँ गाल भी फेर दे, जो तुझ को एक मील बेगार ले जाए तू उसके साथ दो मील जा, जो तेरा कोट माँगे तू उस को कुरता भी दे दे, तू अपने समस्त धन व उपकरण को परमेश्वर के मार्ग में दे दे, तू अपने भाई को सत्तर बार क्षमा कर, आसमान की बादशाहत में धनवान का प्रवेश पाना कठिन है।"

यह और इस प्रकार की बहुत से नसीहतें (उपदेश) अत्यंत हृदय-आनंद हैं, किन्तु अमल से उसकी पुष्टि न हो तो वह चरित्र का अंश नहीं, बल्कि वह केवल मधुर वार्तालाप का एक संग्रह हैं। जिसने अपने दुश्मन पर प्रभुत्व न पाया हो वह क्षमा की अमली मिसाल (व्यवहारिक उदाहरण) कैसे पेश कर सकता है? जिस के पास स्वयं कुछ न हो वह गरीबों, दरिद्रों और अनाथों की सहायता क्योंकर कर सकता है? जो रिश्तेदार और संबंधी, बीवी बच्चे न रखता हो वह इन्ही संबंधों से आबाद दुनिया के लिए उदाहरण क्योंकर बन सकता है ? जिस ने बीमारों की तीमार दारी और अयादत न की हो, वह उसका उपदेश क्योंकर कर सकता है? जिस को स्वयं दूसरों के क्षमा करने का अवसर न मिला हो, उसका जीवन हम में से क्रोधित और गुस्सावर लोगों के लिए नमूना कैसे बने गी ?

ग़ौर कीजिए ! नेकियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक सलबी (निषेधात्मक) और एक ईजाबी (क्रियाशील)। उदाहरण के तौर पर आप पहाड़ के एक खोह में जाकर उम्र भर के लिए बैठ गए, तो केवल यह कहना उचित होगा कि बुराईयों से आप ने बचाव किया, अर्थात् आप ने कोई काम ऐसा नहीं किया जो आप के लिए क़ाबिले एतिराज़

(आपत्ति जनक) हो, किन्तु यह सलबी तारीफ हुई। ईजाबी पहलू आप का क्या है? क्या आप ने गरीबों की मदद की, मुहताजों को खाना खिलाया, कमज़ोरों की हिमायत ही, अत्याचारियों के मुक़ाबला में सत्य बात कही, गिरतों को संभाला, पथ-प्रष्ठों को मार्ग दिखाया, क्षमा, करम, दानशीलता, मेहमान नवाज़ी, सत्य बात कहना, दया-कृपा, सत्य की सहायता के लिए जोश, चेष्टा, प्रयास, फर्ज़ की अदायगी, उत्तरदायित्वता, ज़िम्मेदारियों को निभाना, सारांश यह कि वो समस्त आचार जिन का संबंध अमल से है, वह केवल कार्य न करने से नेकियाँ नहीं बन जाएँ गे। नेकियाँ केवल मन्फी (निष्क्रिय) पहलू ही नहीं रखतीं, अधिकतर ईजाबी और अमली पहलू पर उन का आधार होता है।

इस भाषण से स्पष्ट हो गया कि जिस सीरत का अमली हिस्सा सामने न हो उस को 'आईडियल लाईफ' और अनुसरण योग्य जीवन की उपाधि नहीं दी जा सकती, कि इन्सान उसकी किस चीज़ का अनुसरण करे गा? और किस अमल से पाठ ले गा? हम को तो संधि व युद्ध, निर्धनता व धन, विवाह व संन्यास, परमेश्वर के साथ संबंध (तअल्लुक़ात) और बन्दों के साथ संबंधों, शासन व पराधीनता, सुकून व क्रोध, प्रत्यक्ष व प्रोक्ष, जीवन के हर

पहलू से संबंधित अमली मिसाल (व्यवहारिक उदाहरण) चाहिए। संसार का अधिकतर बल्कि समस्त भाग इन्ही समस्याओं और संबंधों में उलझा हुआ है, इसलिए लोगों को इन्ही समस्याओं का समाधान करने, और इन्ही संबंधों को सर्वश्रेष्ठ ढंग से निभाने के लिए अमली मिसालों (आदर्श) की आवश्यकता है, क़ौली (जुबानी) नहीं बल्कि अमली। लेकिन यह कहना शायरी और खिताबत नहीं, बल्कि ऐतिहासिक घटना है कि इस मेयार पर भी सीरते-मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त कोई दूसरी सीरत पूरी नहीं उतर सकती।

मैं ने आज जो कुछ कहा है उसको अच्छी तरह समझ लीजिए, मैं यह कहना और दिखाना चाहता हूँ कि आदर्श जीवन और अनुसरण का उदाहरण बनने के लिए जिस मानव जीवन का चयन किया जाए उसकी सीरत (जीवनी) के वर्तमान नक्शा में इन चार बातों का पाया जाना आवश्यक है अर्थात् तारीखियत (ऐतिहासिकता), जामेईयत (सर्वव्यापकता), कामेलिय्यत (सम्पूर्णता), और अमलिय्यत (व्यवहारिकता)। मेरा यह उद्देश्य नहीं है कि अन्य पैग़म्बरों के जीवन उनके समय काल में इन विशेषताओं से खाली थे, बल्कि मेरा उद्देश्य यह है कि उनकी सीरतें (जीवनियाँ)

जो उनके बाद सामान्य लोगों तक पहुँचीं या जो आज मौजूद हैं वो इन विशेषताओं से खाली हैं। और ऐसा होना ईश्वरीय मसलिहत के अनुकूल था, ताकि यह सिद्ध हो सके कि वो पैग़म्बर सीमित समय और निश्चित क़ौमों के लिए थे। इसलिए उनकी सीरतों को दूसरी क़ौमों और आने वाले समय तक सुरक्षित रहने की आवश्यकता नहीं थी। केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्व संसार की क़ौमों के लिए और क़ियामत तक के लिए अमल का नमूना और अनुसरण योग्य बनाकर भेजे गए थे, इसलिए आप की सीरत को हर एतिबार से सम्पूर्ण, अनश्वर और सदा के लिए सुरक्षित रहने की आवश्यकता थी। और यही खत्मे नुबुव्वत की सब से बड़ी अमली दलील है।

﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ﴾ (سورة الأحزاب: ٤٠)

"मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, किन्तु वह अल्लाह के पैग़म्बर और ईश्दूतों के मुद्रिका हैं।" (अहज़ाबः40)

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com